Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer - reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in; Email: jmsjournals.in@gmail.com
Impact Factor: 4.032 (IIJIF)
Vol.5, Issue-I, July 2019
e-ISJN: A4372-3118

विंध्यक्षेत्र की मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति – एक विमर्श

डॉ. रमाकान्त
एसो. प्रोफेसर (प्राचीन इतिहास)
नागरिक पी.जी. कालेज
जंघई, जौनपुर

सार–संक्षेप

विंध्यक्षेत्र प्रागैतिहासिक संस्कृतियों के उद्भव एवं विकास की दृष्टि से विश्वविख्यात है। इस क्षेत्र में अवस्थित बेलन तथा सोन नदी घाटियों में उक्त संस्कृतियों का सतत् अनुक्रम उद्घाटित हुआ है जिनमें मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति के साक्ष्य अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा उपादेय है। मध्य प्रदेश के मैहर तथा भीमबैठका से भी मध्य पुरापाषाणिक सामग्री प्रतिवेदित है। इस शोध–पत्र में विंध्यक्षेत्र में अवस्थित विभिन्न मध्य पुरापाषाणिक पुरास्थलों से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्यों से विंध्यक्षेत्र के मध्यपाषाणिक जीवन और अर्थव्यवस्था को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। साथ ही साथ इस संस्कृति के उद्भव एवं अवदान को भी विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

शब्द–कुंजी– विंध्यक्षेत्र, नदी–अनुभाग, बेलनघाटी, द्वितीय ग्रेवेल जमाव, सोनघाटी, पटपरा जमाव, फलक–ब्लेड–स्केपर संस्कृति, मैहर, भीमबैठका, III F-23।

उत्तर–भारत तथा दकन के पठार के अन्तवर्ती क्षेत्र में अवस्थित विंध्य क्षेत्र न केवल प्राकृतिक सम्पदा तथा आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है अपितु ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी इस क्षेत्र की स्थिति अनिर्वचनीय हैं।[1] इस क्षेत्र में किये गये प्रागैतिहासिक अनुसंधानों के फलस्वरूप प्रस्तर–युगीन संस्कृतियों का सतत् अनुक्रम उद्घाटित हुआ है। विंध्य क्षेत्र में निम्न पुरापाषाणिक संस्कृति के अवसान के बाद जिस संस्कृति ने अपना रूप प्रारोहण किया उसे मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति के नाम से जाना जाता है। इस संस्कृति से सम्बन्धित उपकरणों के आकार–प्रकार तथा उनके निर्माण की तकनीक में परिवर्तन दिखाई पड़ता है। उपकरणों का निर्माण फलक अथवा फलक–ब्लेड पर हुआ दिखायी पड़ता है तथा विभिन्न आकार–प्रकार के स्क्रेपरों की प्रधानता दिखाई पड़ती हैं। फलकों, ब्लेड़ों तथा स्क्रेपरों की अधिकता के कारण मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति को **'फलक–ब्लेड–स्क्रेपर'** संस्कृति की संज्ञा दी जाती है।[2]

विंध्यक्षेत्र की मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति की विवेचना के पूर्व भारात में इस संस्कृति के वर्तमान स्वरूप पर विचार कर लेना आवश्यक है। इस सन्दर्भ में सर्वप्रथम उल्लेखनीय है कि सन् 1954 में गोदावरी नदी की सहायक प्रवरा नामक सरिता के बायें तट पर स्थित नेवासा नामक पुरास्थल की खोज से इस प्रकार के पुरापाषाणिक उपकरणों के अध्ययन एवं अनुसंधान की नवीन संभावनाओं का द्वार खुला।[3] इसके पूर्व इस प्रकार के उपकरणों के भूतात्त्विक स्तर–क्रम तथा अन्य प्रमुख विशेषताओं के विषय में कोई सुनिश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं थी।

भारत में मध्य पुरापाषाण काल के पुरास्थल अभी तक केरल, गंगा के मैदानी क्षेत्र तथा असम को छोड़कर भारत के प्रायः अधिकांश प्रदेशों से प्रतिवेदित हुए हैं।[4] भारत में उन स्थलों पर जहाँ मध्य पुरापाषाण काल के उपकरण नदी–वेदिकाओं तथा सोपानों के स्तरित जमाव से प्राप्त हुए हैं, उन्हें नदियों के द्वितीय उच्चयन काल से

सम्बन्धित किया जा सकता है। इस काल के उपकरण नदियों की घाटियों तथा उनके ग्रैवेल जमावों के अतिरिक्त वेदिकाओं, नीची पहाड़ियों के ऊपर, पहाड़ियों की ढालों पर तथा समतल पृथ्वी और पहाड़ी के संगम–स्थल के पहले मिलते हैं।

मध्य पुरापाषाण काल के उपकरण अपनी विशिष्टता के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इस काल तक निम्न पुरापाषाणिक हैण्डऐक्स – क्लीवर शैली के उपकरणों का उद्योग के रूप में अन्त हो जाता है। निम्न पुरापाषाण काल के उपकरणों में केवल स्क्रेपर ही अपने विकसित स्वरूप में मिलते हैं। फलक–तत्त्व जो निम्न पुरापाषाण काल में दृष्टिगोचर हो रहा था, अब बहुत स्पष्ट हो जाता है। इस युग के अधिकांश उपकरणों का निर्माण फलक अथवा फलक–ब्लेड पर हुआ है।[5] डॉ. सांकलिया का विचार है कि मध्य पुरापाषाण काल को 'फलक संस्कृति' भी कहा जा सकता है। उपकरणों पर पुनर्गढ़न के क्षेत्र में इस काल में विशेष परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। पुनर्गढ़न के लिए निश्चय ही **'निपीड–प्रविधि'** का प्रयोग भी प्रचलित हो गया था। उपकरणों की बनावट तथा आकार–प्रकार में भी इस काल में विशेष अन्तर मिलता है। पहले की अपेक्षा उनका आकार बहुत छोटा हो जाता है तथा उनमें सुडौलता तथा कमनीयता बढ़ जाती है। उपकरणों के निर्माण हेतु अभीष्ट एवं उपयुक्त पत्थरों का चयन बहुत समझ–बूझकर किया जाता था।

यहाँ पर यह भी एक विचारणीय प्रश्न है कि निम्न पुरापाषाण काल से मध्य पुरापाषाण काल के उपकरणों का परिवर्तन क्यों और कैसे हुआ? डॉ. सांकलिया की धारणा है कि उपकरणों के इस परिवर्तन के पीछे जलवायुगत परिवर्तन, कुछ नवीन प्रभाव अथवा नवीन प्रजातियों का आगमन कारण हो सकता है। इन सभी संभावनाओं में प्रथम, वर्तमान स्थिति में अधिक बोधगम्य प्रतीत होता है। दोनों कालों की जलवायु में निःसन्देह बहुत परिवर्तन रहा होगा। बदलती हुई जलवायु तथा वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए तत्कालीन मानव को अपने उपकरणों में संभवतः परिवर्तन करना पड़ा होगा। इस परिवर्तन में मानव के बढ़ते हुए तकनीकी ज्ञान ने भी यथेष्ठ सहयोग दिया होगा।

भारत में मध्य पुरापाषाण काल की संस्कृतियों के कालानुक्रम की समस्या अत्यन्त जटिल है। यहाँ पर उल्लेखनीय है कि गोदावरी, नर्वदा, बेलन तथा सोन आदि नदियों के द्वितीय उच्चयन काल के स्तरित जमावों से पशुओं के बहुसंख्यक जीवाश्म प्राप्त हुए हैं। ये जीवाश्म घोड़ा या ईक्वस, दरियायी घोड़ा, नीलगाय, अथवा गवियालिस तथा कछुओं आदि के हैं। इन जीवाश्मों को सामान्यतः उच्च प्रातिनूतन काल से सम्बन्धित माना जाता है। जीवाश्मों की अपेक्षा रेडियों कार्वन तिथियाँ तथा उष्मादीप्ति तिथियाँ मध्य पुरापाषाण काल के कालानुक्रम के लिए विशेष उपयोगी हैं। लेकिन यह भी सत्य है कि मध्य पुरापाषाण काल के प्रारम्भ की तिथियाँ रेडियों कार्बन तिथि–प्रणाली की सीमा से बहुत बाहर हैं। फिलहाल भारत के दिदवाना से मध्य पुरापाषाण काल की थोरियम/यूरेनियम तिथि प्राप्त हुई है जो 126000 पूर्व की है। इसके अतिरिक्त शर्मा और क्लार्क[7] तथा विलियम्स और रायस[8] मध्य सोनघाटी के पटपरा जमाव की तिथि 10,0000 से 30,000 वर्ष पूर्व रखते हैं। सागीलेरू घाटी ग्रैवेल II के ऊपर के स्तर में 'गैस्ट्रोपायड शेल्स' से दो रेडियों कार्बन तिथियाँ प्राप्त हैं जो इसे 23,000 वर्ष से पूर्व रखती हैं। इन तिथियों के आलोक में मध्य पुरापाषाण काल की तिथि कम से कम 12,5000 से 40,000 वर्ष पूर्व के मध्य निर्धारित की जा सकती है (वी. ए. मिश्र, 1995)।

उपरोक्त सम्पूर्ण विमर्श का मुख्य ध्येय भारतीय मध्य पुरापाषाणिक संस्कृतियों के सम्बन्ध में सामान्य जानकारी प्राप्त करना था जिससे अपने अध्येय क्षेत्र (विंध्यक्षेत्र) की मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति की स्थिति का सही समाकलन किया जा सके। मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति के अध्ययन की दृष्टि से लगभग सम्पूर्ण विंध्यक्षेत्र प्रागैतिहासिक अध्येताओं के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। प्रागैतिहासिक अनुसंधान के फलस्वरूप उत्तर–प्रदेश के चन्दौली, सोनभद्र, मिर्जापुर, इलाहाबाद जिले की मेजा, कोराँव, करछना तथा बारा तहसीलें, चित्रकूट, बाँदा, हमीरपुर, झाँसी तथा ललितपुर नामक जिलों में मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति से सम्बन्धित अनेक पुरास्थल प्रकाश में आये हैं। मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित भीम–बैठका की गुफायें, पन्ना जिले में केन के किनारे स्थित पाण्डव–प्रपात तथा सीधी जिले में सोन नदी की घाटी में विद्यमान सिहावल, नकझर खुर्द तथा पटपरा आदि के पुरास्थल इस सन्दर्भ में विशेष महत्त्वपूर्ण माने जा सकते हैं।

विंध्य क्षेत्र की मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति से सम्बन्धित उपरोक्त पुरास्थलों में ज्यादातर पुरास्थल ऐसे हैं जहाँ के धरातलीय सर्वेक्षण से ही उपकरणों की संप्राप्ति हुई है। ऐसे पुरास्थल कम हैं, जहाँ से प्राप्त उपकरणों का पुरातात्त्विक सन्दर्भ ज्ञात है। इस दृष्टि से इलाहाबाद जिले में स्थित बेलन घाटी, मध्य प्रदेश की सोन घाटी, मैहर तथा भीम–बैठका विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। निम्न पृष्ठों में इन्हीं स्थलों पर उद्घाटित मध्य पुरापाषाणिक उद्योग–परम्परा का विवेचन किया जायेगा।

विंध्य क्षेत्र में स्थित बेलन घाटी तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्र मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति के दृष्टिकोण से सबसे महत्त्वपूर्ण स्थलों में से हैं। भारत का यह प्रथम स्थल है जहाँ पर मध्य पुरापाषाण कालीन उपकरणों की उत्पत्ति एवं विकास की समस्याओं पर प्रकाश पड़ा है तथा उत्पत्ति की प्रत्येक स्थिति का सम्बन्धीकरण निश्चित भू–वैज्ञानिक स्तरों से स्थापित किया जा सका है (रेखाचित्र 1.)।

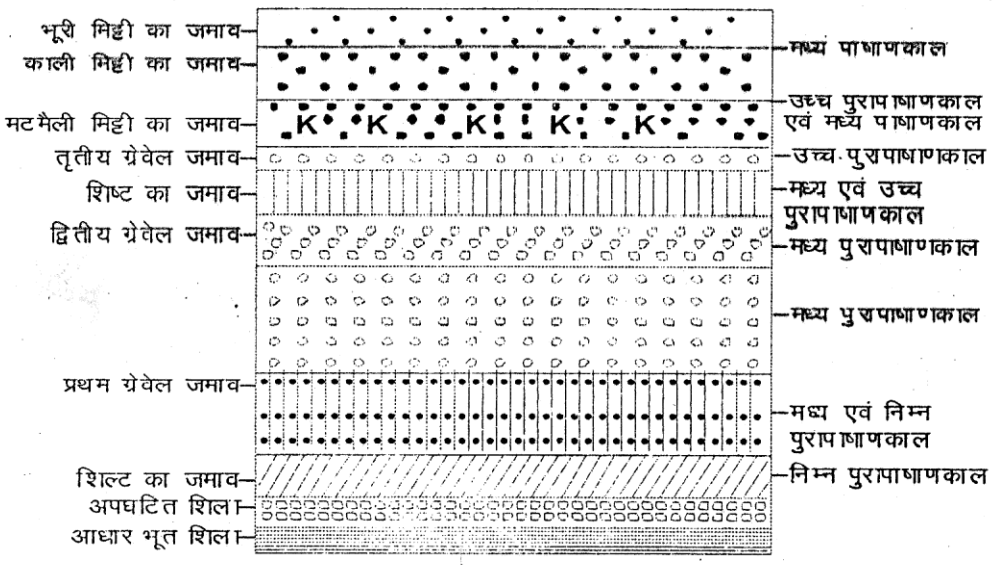

रेखाचित्र 1 : बेलन नदी : भूतात्विक जमाव की रूपरेखा
एस०एन० राजगुरू एवं जी०जी० मजूमदार (1967) के अनुसार

उपरोक्त रेखाचित्र से स्पष्ट है कि बेलन घाटी में प्रथम ग्रैवेल से निम्न पुरापाषाणिक उपकरण मिलते हैं। लेकिन मध्य पुरापाषाणिक उपकरणों की संप्राप्ति द्वितीय ग्रैवेल जमाव से होती है। द्वितीय ग्रैवेल जमाव को संरचना

के आधार पर तीन उपविभागों में विभाजित किया गया है, जिन्हें क्रमशः ऊपर से नीचे 'अ', 'ब' तथा 'स' कहा गया है।[9] इस ग्रैवेल के निम्नतम उपविभाग 'स' से प्राप्त पुरावशेष निम्न पुरापाषाण काल से मध्य पुरापाषाण काल के परिवर्तन (Transition) का अभिद्योतन करते हैं। इस जमाव से हैण्डऐक्स का अभाव, सीमित संख्या में क्लीवरों का मिलना, फलक–तत्त्व की अधिकता तथा उपकरणों के आकार में परिवर्तन आदि इस तथ्य की ओर निर्देश करते हैं कि प्राचीन उद्योग का अन्त तथा नवीन उद्योग का क्रमिक विकास हो रहा था। उक्त उपविभाग से प्राप्त दो उपकरणों को छोड़कर सभी उपकरण क्वाट्र्जाइट पर बने हैं। इस स्तर से **बाँस नमाडिकस** के जीवाश्म भी मिले हैं।[10]

द्वितीय ग्रैवेल के मध्यवर्ती उपविभाग 'व' से 'फलक–ब्लेड–स्क्रेपर' परम्परा के उपकरणों की सम्प्राप्ति हुई है। इस स्तर से निम्न पुरापाषाणिक उपकरणों का नितान्त अभाव दिखायी पड़ता है। उपकरणों में 73% स्क्रेपर हैं, जिनमें 57% स्क्रेपर क्वाट्र्जाइट पर तथा 43% स्क्रेपर चर्ट पत्थर पर निर्मित हैं। इस स्तर से सबसे अधिक जीवाश्म मिले हैं। जीवाश्म में सबसे अधिक संख्या **बाँस** तथा **एलीफस** की ही है।

द्वितीय ग्रैवेल के सबसे ऊपरवर्ती उपविभाग 'अ' से भी लगभग उसी तरह के उपकरण मिले हैं जैसे उपविभाग 'ब' से मिले हैं। लेकिन 'अ' उपविभाग के उपकरणों का आकार अपेक्षाकृत छोटा दिखायी पड़ता है। इसके अतिरिक्त चर्ट तथा तत्सदृश पत्थरों का उपयोग 80% तक हो जाता है। बेलनघटी में द्वितीय ग्रैवेल के ऊपर लाल रंग की जलोढ़ मिट्टी का जमाव है। इस जमाव से भी मध्य पुरापाषाण युगीन उपकरणों की सम्प्राप्ति हुई है। इसमें स्क्रेपर 85% तथा ब्लेड 15% हैं। उपकरणों के निर्माण में प्रमुखतया चर्ट तथा तत्सदृश पत्थरों का उपयोग किया गया है। यहाँ यह बात विशेषरूप से उल्लेखनीय है कि बेलन घाटी में मध्य पुरापाषाणिक स्तरों के ऊपर के जमावों में पुनः मध्य पुरापाषाण काल तथा उच्च पुरापाषाण काल के परिवर्तन (Transition) के साक्ष्य मिले हैं।

बेलन घाटी के द्वितीय ग्रैवेल के अतिरिक्त मध्य पुरापाषाणिक उपकरण निकटवर्ती क्षेत्र में पहाड़ियों की ढाल पर नीची पहाड़ियों के ऊपर तथा वेदिकाओं पर भी उद्योग–स्थल के रूप में मिलते हैं। बेलन घाटी में अद्यतन 87 मध्य पुरापाषाणिक पुरास्थलों को चिन्हित किया गया है जिनमें लगभग 23 को उद्योग–स्थल कहा जा सकता है।[11] इन उद्योग–स्थलों में बटाउवीर , खूटावीर, मड़वा तथा नाउन कला आदि विशेष महत्त्व रखते हैं। बटाउवीर तथा खूटावीर बेलन नदी के दक्षिण तथा कैमूर के उत्तर में इलाहाबाद–मिर्जापुर की सीमा पर स्थित हैं। मड़वा तथा नाउन कला मिर्जापुर के कैमूर के ऊपर हैं।

बटाउवीर तथा खूटावीर नामक पुरास्थलों से बहुत अधिक संख्या में उपकरणों की संप्राप्ति हुई है। उपकरणों के निर्माण में महीन कण वाले क्वाट्र्जाइट पत्थर का प्रयोग किया गया है जिसमें लोहे की मात्रा भी अधिक प्रतीत होती है। उपकरणों का निर्माण छोटे शिला खण्ड़ों का फलकीकरण करके किया गया है। सबसे अधिक संख्या स्क्रेपरों की है। उनमें भी चक्राभ अथवा चक्राकार स्क्रेपर सबसे अधिक हैं। स्क्रेपरों के निर्माण में नियमित फलकीकरण प्रविधि का प्रयोग किया गया है। स्क्रेपर के अतिरिक्त ब्लेड, शर, छिद्रक और फलक भी प्रभूत संख्या में मिले हैं। लेवा–लेवा पद्धति का विकास हो गया था क्योंकि उस पद्धति से निकाले गये फलक तथा कोर भी प्राप्त हुए हैं। उपकरणों में पुनर्गठन के प्रमाण मिलते हैं, किन्तु संभवतः निपीड–प्रविधि से पुनर्गठन नहीं होता था क्योंकि वे

बहुत क्रमिक अथवा महीन नहीं है। इस बात की प्रबल संभावना है कि छोटे फलकों को निकालने के लिए कोमल अथव बेलनाकार हथौड़े का ही प्रयोग हुआ होगा।[12]

मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति के अध्ययन की दृष्टि से विंध्यक्षेत्र का दूसरा महत्त्वपूर्ण क्षेत्र सोनघाटी है। यहाँ अद्यतन 86 मध्य पुरापाषाणिक पुरास्थल प्रकाशित हैं जिनमें 23 पुरास्थलों को उद्योग–स्थल कहा जा सकता है।[13] सोनघाटी के उद्योग–स्थल सोन के बायें समानान्तर चलने वाली कैमूर श्रृंखला के मध्यवर्ती–कटक तथा दक्षिणी ढलान पर स्थित पाये गये हैं। प्रमुख पुरास्थलों में मध्य प्रदेश के सीधी जिले में स्थित कुकराँव, हटवा, कुर्दाडीह, कोटार, काडिला, रामडिहा, तिमिसी, मुसालहवा, धाबा, नरकुइन, कोसापरी, अमरादन, धोमन की पहरी, अमरपुर, बलियार, ओदरा तथा उत्तर–प्रदेश के मिर्जापुर जिले में स्थित खैरिहया तथा बारीगाँव विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

सोनघाटी के मध्य पुरापाषाणिक उद्योग को पटपरा जमाव से सम्बन्धित किया गया है जहाँ वे द्वितीयक सन्दर्भ में मिलते हैं (रेखाचित्र 2.)। सोनघाटी से संकलित उपकरणों में स्क्रेपर, चक्राभ, प्वाइण्ट्स, बोरर, ब्लेड, कोर, फलक, आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उपकरणों के निर्माण के लिए चर्ट, क्वाट्र्जाइट, फ्लिण्ट और जैस्पर का प्रयोग किया गया है लेकिन चर्ट सबसे लोकप्रिय पत्थर दिखाई पड़ता है।

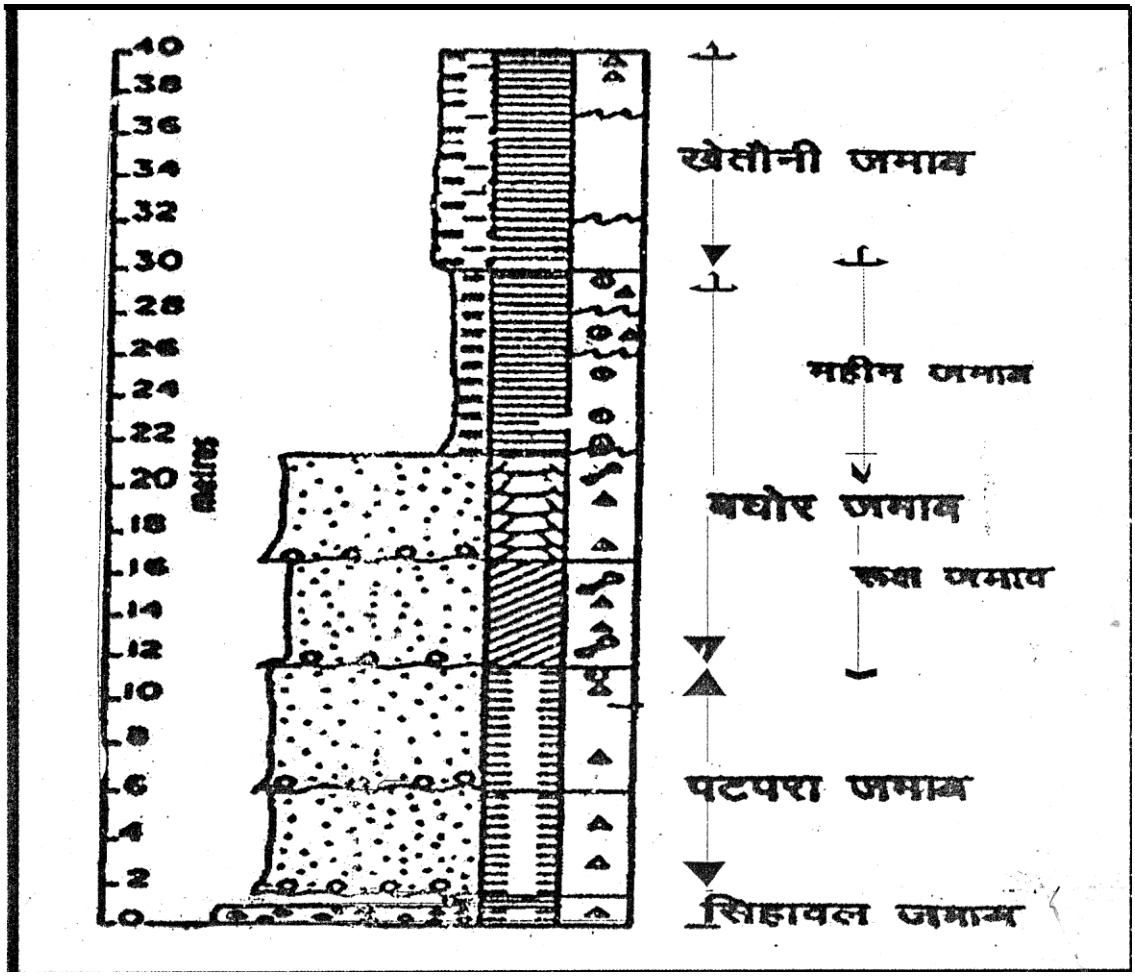

रेखाचित्र 2 : मध्य सोनघाटी : समेकित अनुभाग

(विलियम एवं कीथ रायस (1983) के अनुसार)

सोनघाटी का मध्य पुरापाषाणिक उद्योग फलक–बहुल दिखायी पड़ता है। अधिकांशतया सभी उपकरणों का निर्माण फलक पर किया गया है। अधिकांश फलक प्रत्यक्ष–संघात–प्रविधि द्वारा निकाले गये प्रतीत होते हैं लेकिन कुछ फलकों को निकालने के लिए अप्रत्यक्ष–संघात–प्रविधि, बेलनाकार अथवा कोमल हथौड़ा–पद्धति का भी प्रयोग किया गया था, ऐसा प्रतीत होता है। कुछ फलकों के ऊपर पड़े फलक–चिन्हों तथा उनके फलकित आघात–स्थलों को देखने से स्पष्ट है कि लेवा–लेवा प्रविधि का प्रयोग होने लगा था। ज्यादातर उपकरणों पर पुनर्गठन के साक्ष्य मिलते हैं। पुनर्गठन निश्चित रूप से प्रत्यक्ष–संघात–प्रविधि तथा कोमल हथौड़े से किया जाता था। कभी–कभी ऐसा भी लगता है कि निपीड–प्रविधि का भी प्रचलन हो गया था किन्तु इसके प्रमाण अधिक नहीं है।

सोनघाटी के कुछ पुरास्थलों से विकसित हैण्डऐक्स भी मिले हैं। ये बिल्कुल ताजे हैं तथा इनका निर्माण उन्हीं पत्थरों पर किया गया जिन पत्थरों पर अन्य मध्य पुरापाषाणिक उपकरण बने हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि बदलती हुई परिस्थिति में कभी–कभी पूर्ववर्ती उपकरणों का निर्माण परिवर्तित रूप में होता था। ये उपकरण भी सम्बन्धित पुरास्थल के मध्य पुरापाषाणिक उद्योग के अभिन्न अंग प्रतीत होते हैं।

बेलन घाटी तथा सोन घाटी के मध्य पुरापाषाणिक उद्योगों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दोनों नदी–घाटियों के मध्य पुरापाषाणिक उद्योगों की स्तरीकृत स्थिति समान हैं। बेलन का द्वितीय ग्रैवेल तथा सोन का पटपरा जमाव दोनों नदियों के द्वितीय उच्चयनकाल से सम्बन्धित हैं। भारतीय उपमहाद्वीप के मध्य पुरापाषाणिक पुरास्थलों से प्राप्त उपकरणों के प्रायः सभी प्रकार इन दोनों नदी–घाटियों में मिले हैं। इन समानताओं के अतिरिक्त कुछ विरोधाभास भी उल्लेखनीय हैं। बेलनघाटी में मध्य पुरापाषाणिक उपकरणों की संप्राप्ति रेडिस सिलृ (Reddish silt), पीली गाद (yellow silt) तथा द्वितीय ग्रैवेल जमाव की दो इकाईयों – II B और II C से होती है। लेकिन सोनघाटी में केवल पटपरा जमाव से ही उक्त उपकरण मिले हैं। यद्यपि बागोर जमाव से भी मध्य पुरापाषाणिक उपकरणों की संप्राप्ति हुई है किन्तु वे काफी घिसे हुए हैं। वे बागोर जमाव से प्राचीन प्रतीत होते हैं। बेलन की अपेक्षा सोन में ब्लेड–तत्त्व ज्यादा स्पष्ट है। बेलन घाटी के किसी भी मध्य पुरापाषाणिक पुरास्थल से हैण्डऐक्स नहीं मिले हैं। उपकरणों के निर्माण में पत्थरों के चयन की दृष्टि से सोनघाटी में विविधता दिखायी पड़ती है।[14]

सोनघाटी में मध्य पुरापाषाणिक उपकरणों से सम्बन्धित स्तर से एलीफस, बॉस, ईक्वस, कार्निवार, वाइसन, सुस धवियालिस, चेलोनिया आदि के बहुत अधिक संख्या में जीवाश्म मिले हैं।

मध्य प्रदेश के सतना जिले में स्थित मैहर से भी मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति के साक्ष्य मिले हैं। इस पुरास्थल का उत्खनन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. जे.एन. पाण्डेय तता प्रो. जे.एन. पाल द्वारा तीन उत्खनन सत्रों (1987, 1988 तथा 1991) में सम्पादित किया गया।[15] यहाँ पर चार विभिन्न क्षेत्रों (मैहर I, मैहर II, मैहर III, तथा मैहर IV) में उत्खनन किया गया जिनमें से मैहर II तथा मैहर III से मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति के अवशेष मिले हैं। मैहर पुरास्थल से प्राप्त सभी उपकरण चर्ट, क्वाट्र्जाइट तथा चल्सिडनी से निर्मित हैं। इनको दो वर्गों में विभाजित किया गया है – 1. अनुपयोजित फलक आदि, 2. उपकरण। उपकरणों में पुनर्गठित ब्लेड तथा फलक, विविध प्रकार के ब्लेड, भुथड़ें पार्श्वब्लेड, दन्तुरित ब्लेड एवं विविध प्रकार के त्रिभुज, ल्यूनेट, अन्त स्क्रेपर, छिद्रक आदि थे।

मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित भीमबैठका से भी मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति के साक्ष्य मिले हैं। यहाँ पर वी.एन. मिश्र ने शिलाश्रय संख्या III F–23 में शिलाश्रय के अन्दर लगभग 32 वर्ग मी. क्षेत्र में उत्खनन किया था। उत्खनन के परिणाम स्वरूप 3.60 मी. मोटा सांस्कृतिक जमाव प्रकाश में आया जिसे 8 स्तरों में विभाजित किया गया। स्तर संख्या 1,2 तथा 3 से ज्यामितिक लघुपाषाण उपकरण, पाटरी, सिल–लोढ़े आदि पुरावशेष मिले। स्तर संख्या 4 तथा 5 से मध्य पुरापाषाणिक उपकरणों की सम्प्राप्ति हुई तथा स्तर संख्या 6,7,8 से आश्यूल उपकरण प्रतिवेदित हुए।

यहाँ पर स्तर संख्या 4 से क्वाट्र्जाइट के फलक, ब्लेड, पार्श्व तथा अन्त स्क्रेपर और व्यूरिन मिले हैं जो मध्य पुरापाषाण कालीन अथवा उच्च पुरापाषाण कालीन उद्योग का निर्देश करते हैं। स्तर संख्या 5 से विविध प्रकार के पार्श्व स्क्रेपर, अन्तस्क्रेपर, लेवा–लेवा फलक, ब्लेड तथा कभी–कभी हैण्डऐक्स और क्लीवर नीचे 10 सेमी. तक के जमाव में मिलते हैं। वी. एन. मिश्र जी ने इसे मुस्तेरियन उद्योग के अन्तर्गत रखा है। यह उद्योग मध्य पुरापाषाणिक है तथा इसका विकास आशूलिया संस्कृति से होता है। वी.एन. मिश्र के अनुसार बहुत से उपकरण फलक के स्थान पर प्राकृतिक चिपटे पत्थरों पर बने हैं।

विंध्यक्षेत्र की मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति से सम्बन्धित उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि इस क्षेत्र में मध्य पुरापाषाणिक उपकरण नदियों के द्वितीय उच्चयन काल से सम्बन्धित हैं। नदियों के द्वितीय ग्रैवेल जमाव के अतिरिक्त सम्बन्धित क्षेत्र में स्थित पहाड़ियों की ढ़लानों पर भी अनेक उद्योग–स्थल मिले हैं। उपकरणों में फलक–तत्त्व की प्रधानता अब सामान्य बात दिखायी पड़ती है। यह भी स्पष्ट है कि इन फलक–प्रधान उद्योगों का विकास पूर्ववर्ती एश्यूलॅन परम्परा से हुआ जिसके निदर्शक साक्ष्य बेलन आदि नदियों की घाटियों में स्पष्टतः देखे जा सकते हैं। प्राप्त साक्ष्यों से यह भी निर्देशित होता है कि परवर्ती उच्च पुरापाषाणिक संस्कृति के उदय में भी मध्य पुरापाषाणिक संस्कृति ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

सन्दर्भ सूची

1. वाडिया, डी.एन. 1973, द विंध्यन सिस्टम, *जियोलॉजी ऑफ इण्डिया,* पृष्ठ 121–131, नई दिल्ली।
2. मलिक, एस.सी. 1959, *स्टोन एज इण्डस्ट्रीज ऑफ द बाम्बे एण्ड सतारा डिस्ट्रिक्ट्स,* पृष्ठ 431।
3. सांकलिया, एच.डी. तथा अन्य 1960, *फ्राम हिस्ट्री टू प्रीहिस्ट्री एट नेवासा,* 1954–56 पूना।
4. पाण्डेय, जे.एन. 2013, *पुरातत्त्व विमर्श,* पृष्ठ 256, प्राच्य विद्या संस्थान इलाहाबाद।
5. वर्मा, आर.के. 1974, अपर पेलियोलिथिक इण्डस्ट्री ऑफ बेलन वैली, सेमिनार, *प्रीहिस्ट्री 1974,* डेकन काजेल पूना।
6. सांकलिया, एच.डी. 1964, *स्टोन एज टूल्स,* पृष्ठ 60, पूना।
7. शर्मा, जी.आर. और जे.डी. क्लार्क (सम्पादक), 1983, *पेलियोइन्वायरमेंट एण्ड प्रीहिस्ट्री इन मिडिल सोन वैली,* प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद।
8. विलियम्स, एम.जे. एण्ड कीथ रायस, 1983, एल्यूवियल हिस्ट्री ऑफ मिडिल सोन वैली, नार्थ सेंट्रल इण्डिया, इन *पेलियो इन्वायरमेंट एण्ड प्रीहिस्ट्री इन द मिडिल सोन वैली,* जी.आर. शर्मा और जे.डी. क्लार्क (सम्पादक), पेज 161–196, इलाहाबाद।
9. वर्मा, आर.के. 2017, *भारत की प्रस्तयुगीन संस्कृतियाँ,* पेज 215, परमज्योति प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. *वही,* पृष्ठ 217।
11. मिश्रा, वी.डी. 1980, लोवर एण्ड मिडिल पेलियोलिथिक कल्चर्स ऑफ नार्दर्न विंध्याज, इन *इण्डियन प्रीहिस्ट्री,* पृष्ठ 67, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
12. वर्मा, आर.के. 2017, *पूर्वोक्त,* पृष्ठ 216।
13. मिश्रा, वी.डी. 1980, *पूर्वोक्त,* पृष्ठ 68।
14. मिश्रा, वी.डी. 1980, *पूर्वोक्त,* पृष्ठ 69।
15. पाल, जे.एन. और जे. एन. पाण्डेय, 1992–93, पेलियोलिथिक मैहर, एक्सकेवेशन इन कोआथरशिप विद जे.एन. पाण्डेय, *प्राग्धारा,* न 13, पृष्ठ 227–230।
16. मिश्रा, वी.एन. 1974, हि आशूलियन इण्डस्ट्री ऑफ राक सेल्टर III F – 23 ऐट भीम बैठका, सेंट्रल इण्डिया ए प्रीलिमिनरी एनालिसिस साइक्लोस्टाइल कापी, सेमिनार, *इण्डियन प्रीहिस्ट्री 1974,* पूना तथा *पुरातत्त्व,* न. 8. पृष्ठ 13–36।